## पद २९१

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

इतुलेनें झालें काय रे। परब्रह्म हाता न ये रे ।।ध्रु.।। मी देह भ्रांति जाय पुन्हां न ये त्या वाटा। अहं ब्रह्मास्मि म्हणूनी मनीं भरलासे ताठा।।१।। 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति' हेंहि जाणूनी श्रुति। 'सर्वं खिल्वदं ब्रह्म' याची दृढ प्रतीति।।२।। 'नेति नेति नेति' वेद बोलोनि राहे। माणिक म्हणे अनिर्वाच्य तेथें बोल न साहे।।३।।